पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित 16.05.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालयः आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाषः 9810117464, 9868051444

डॉ. अनिल आर्यः आगामी कार्यक्रम

1. 22 मई, विशाखा एनक्लेव, दिल्ली
2. 29 मई, बहरोड़ राजस्थान
3. 4 जून, सैक्टर–15 फरीदाबाद
4. 5 जून, कैथल हरियाणा
5. 7 जून, नरवाना जीन्द
6. 11 जून, ऐमेटी नोएडा
7. 12 जून, सैक्टर–88 फरीदाबाद
8. 13 जून, पलवल हरियाणा
9. 19 जून, ऐमेटी नोएडा
10. 20 जून, जयपुर, राजस्थान
11. 22 जून, करनाल, हरियाणा
12. 26 जून, जानीपुर, जम्मू

वर्ष-32 अंक-22 जयेष्ठ-2073 दयानन्दाब्द 192 16 मई से 31 मई 2016 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशितः 16.05.2016 E-mail:aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website: www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ग्रीष्म कालीन अवकाश में युवा निर्माण के लिए 15 शिविरों का आयोजन

विशाल ''युवक चरित्र निर्माण शिविर'' हेतु अपील व निमन्त्रण

प्रिय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते। गत् वर्षों की भांति इस वर्ष भी आपकी प्रिय संस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् युवा पीढ़ी के सर्वांगीण विकास तथा उन्हें महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से ओतप्रोत करने के लिए शनिवार 11 जून से रविवार 19 जून 2016 तक **''युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर''** का रचनात्मक आयोजन **ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा में कर रही है।**

इन शिविरों के माध्यम से ही सुलझे हुए व ठोस कार्यकर्ता आर्य समाजों को मिलते हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप अपने व अपनी आर्य समाज के युवकों को शिविर में अवश्य ही भेजें।

उद्घाटन समारोह शनिवार 11 जून 2016 को सायं 5:00 से 7:00 बजे तक होगा तथा **शिविर समापन समारोह रविवार 19 जून** को प्रातः 11 बजे से 1.30 बजे तक सम्पन्न होगा। इसके साथ ही प्रतिदिन रात्रि 8.45 से 9.45 बजे तक आचार्य भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली) के मधुर भजनों का कार्यक्रम भी सभी आर्य बन्धुओं के लिए चलेगा।

अतः आप से अनुरोध है कि कृपया उपरोक्त कार्यक्रमों में अपने इष्ट मित्रों व परिवार सहित स्पेशल बसों या मैटाडोर द्वारा अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर आर्य युवकों का उत्साहवर्धन करें। समारोह के पश्चात दोनों दिन ऋषि लंगर का प्रबन्ध रहेगा।

आप जानते ही हैं कि इस विशाल आयोजन में आर्य युवकों के दस दिन तक तीन समय के प्रातः राश तथा भोजन प्रबन्ध पर हजारों रुपये व्यय होगा। यह सब आपके प्रेम व सहयोग से ही पूरा होना है। अतः आपसे अनुरोध है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अपनी ओर से व्यक्तिगत, अपनी आर्य समाज या संस्था की ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करवाने की कृपा करें।

समस्त क्रास चैक, ड्राफ्ट, मनीआर्डर **''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''** के नाम से मुख्य कार्यालय - **आर्य समाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली**-110007 के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आप अपना सहयोग **खाता सं. 10205148690** एसबीआई घंटाघर, दिल्ली, आई.एफ.एस कोड SBIN0001280 में सीधे जमा करवा सकते हैं। कृपया 9868002130 पर SMS अवश्य कर दें।

आप ''ऋषि लंगर'' के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, दलिया, सब्जी, पाउडर दूध, शुद्ध घी, रिफाइन्ड के रूप में खाद्य सामग्री भिजवा कर भी सहयोग कर सकते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि आप अपनी ओर से तथा अपने इष्ट मित्रों से भी अधिक से अधिक सहायता राशि भिजवाने की कृपा करेंगे।

आपके पूर्ण सहयोग की कामना के साथ

निवेदकः

डा. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	रामकुमार सिंह	गवेन्द्र शास्त्री	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय बौद्धिकाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9810117464	9013137070	9868064422	9810884124	9871581398

'अविद्यायुक्त असत्य धार्मिक मान्यताओं का खण्डन और आर्यसमाज'

–मनमोहन कुमार आर्य (पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001 फोनः09412985121)

महर्षि दयानन्द प्राचीन वैदिक कालीन ऋषियों की परम्परा वाले वेदों के मंत्रद्रष्टा ऋषि थे। वह सफल व सिद्ध योगी होने के साथ समस्त वैदिक व इतर धर्माधर्म विषयक साहित्य के पारदर्शी विद्वान भी थे। उन्होंने मथुरा निवासी वैदिक व्याकरण के सूर्य प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से आर्ष व्याकरण की अष्टाध्यायी–महाभाष्य पद्धति का अध्ययन किया था। इससे पूर्व भी अपने लगभग 30 वर्षों के अध्ययन काल (1833–1863) में उन्होंने विभिन्न गुरुओं वा विद्वानों से लौकिक संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया था। गृहत्याग के बाद के लगभग 29 वर्षों में (1846–1875) आप देश के अनेक भागों के अनेक लोगों के सम्पर्क में आये। आपने देश में फैले हुए नाना मत मतान्तरों के अनुयायियों सहित उनके आचार्यों से सम्पर्क कर उनके मत के गुणागुणों व विशेषताओं सहित उनमें निहित सत्यासत्य को जानने का सत्प्रयास किया था। स्वामी दयानन्द ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो किसी भी अविद्यायुक्त वा मिथ्या बात को बिना पूरी परीक्षा व सन्तुष्टि के स्वीकार कर लेते। यही कारण था कि भारत के प्रायः सभी मत–मतान्तरों को जानने व समझने पर भी उनकी तृप्ति नहीं हुई थी। वह योग विद्या में प्रवृत्त हुए और उसमें दिन प्रतिदिन प्रगति करते रहे। उसका उन्होंने जीवन के अन्तिम क्षणों तक अभ्यास व पालन किया। नाना मत–मतान्तरों में से वह किसी एक मत के चक्रव्यूह में नही फंसे। ऐसा प्रतीत होता है कि वह जान गये थे कि भारत में प्रचलित किसी भी मत–मतान्तर में निर्भ्रान्त व सत्य पर आधारित मान्यतायें नहीं हैं। उन्हें योग ही प्रिय प्रतीत हुआ जिसका उन्होंने मन–वचन–कर्म से क्रियात्मक अभ्यास किया। इतना होने पर भी वह अभी सत्य विद्या व सद्ज्ञान की उपलब्धि के लिए आशान्वित व प्रयत्नशील थे। सन् 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हो जाने व उसके बाद देश में कुछ शान्ति व स्थिरता बहाल होने पर वह सन् 1860 में मथुरा में दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु दिव्य गुरु विरजानन्द की संस्कृत पाठशाला में विद्या के अध्ययन के लिए पहुंचते हैं और लगभग 3 वर्ष अध्ययन कर सफल मनोरथ व कृतकार्य होते हैं। अध्ययन पूरा होने पर गुरुजी से दीक्षा लेते हैं और गुरु की आज्ञा के अनुसार असत्य व अविद्या से ग्रसित मतों के खण्डन व सत्य वैदिक मत की स्थापना के लिए प्रवृत्त होते हैं।

महर्षि दयानन्द के जितने भी किंचित विस्तृत व संक्षिप्त उपदेश उपलब्ध होते हैं उनसे यही पता चलता है कि वह वेद एवं वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन करते थे। वेद से इतर वेद विरुद्ध मिथ्या मतों का वह युक्ति, तर्क व वेद के प्रमाणों के आधार पर खण्डन भी करते थे। वह सब श्रोताओं किंवा मत–मतान्तरों के आचार्यों को चुनौती भी देते थे कि वह अपने–अपने मत की मिथ्या मान्यताओं का निराकरण करें वा सत्य मत वेद को अपनायें और यदि चाहें तो वह उनसे शास्त्रार्थ, वार्तालाप, चर्चा व शंका समाधान भी कर सकते हैं। हमें यह देख कर आश्चर्य होता है कि उन्हें सभी मत–मतान्तरों की उत्पत्ति, मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का भी व्यापक ज्ञान था। ऐसा भी देखा गया है कि अनेक मतों के आचार्यों को अपने मत की मिथ्या मान्यताओं का परिचय नहीं होता था। वह तो अपने मत के प्रति अन्धी श्रद्धा व विश्वास के कारण उनको 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' के आधार पर आंखे बन्द कर स्वीकार करते थे और उनका पालन करते थे जबकि उनके मत सत्यासत्य की दृश्टि से असत्य मान्यताओं से मिश्रित होते थे। महर्षि दयानन्द के सामने आकर वह सभी निरुत्तर होकर लौट जाते थे। महर्षि दयानन्द के प्रचार के कारण मत–मतान्तरों के अनेकानेक विद्वानों वा आचार्यों को अपने–अपने मत के मिथ्यात्व का ज्ञान हो गया था। वह उन्हें चुनौती देने वा आमंत्रित करने पर भी शास्त्रार्थ व शंका समाधान तक के लिए उनके निकट नहीं आते थे और येन केन प्रकारेण अपने मतानुयायियों को स्वामी दयानन्द जी की सभाओं में जाने के लिए निषिद्ध करते थे। प्रायः सभी मतानुयायियों की स्थिति यह थी कि वह अपने–अपने मत के आचार्यों के अनुचित आदेश को मानते थे और स्वामी दयानन्द की सभाओं में नहीं आते थे। इससे अनुमान किया जा सकता है कि अपने–अपने मत–मतान्तरों को अच्छा बताने वाले आचार्यों की क्या स्थिति थी। आज भी उस स्थिति में कोई अधिक अन्तर नहीं आया है। अब वह अधिक रूढ़िवादी और कट्टर हो गये हैं और अविद्यान्धकार से ग्रसित, हठ व दुराग्रह आदि से घिरे हुए हैं। अतः आज वेद मत के मण्डन सहित मत–मतान्तरों के खण्डन की महती आवश्यकता बनी हुई है। ऐसा होने पर ही मनुष्य जाति उन्नत व अपने–अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सफल हो सकती है अन्यथा अविद्या के अन्धकार में पड़कर उनका यह मानव जीवन व्यर्थ व नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा।

महर्षि दयानन्द ने विश्व जन समुदाय पर एक बहुत बड़ा उपकार यह किया है कि उन्होंने अपने समय में केवल मौखिक प्रचार ही नहीं किया अपितु अपनी वैदिक विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों के अनेक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया। उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश विश्व के धार्मिक व सामाजिक साहित्य में अन्यतम है। वेदों के बाद विश्व साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसे 14 समुल्लासों वा अध्यायों में लिखा गया है जिसमें प्रथम 10 अध्याय वैदिक मत का मण्डन करते हुए ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित सभी विषयों व सामाजिक मान्यताओं पर वैदिक दृष्टिकोण व विचारों को प्रस्तुत करते हैं। इस अपूर्व ग्रन्थरत्न में प्रायः सभी आवश्यक विशयों की चर्चा कर तद्विशयक वैदिक दृष्टिकोण को तर्क व युक्ति सहित एवं अनेक स्थानों पर प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत कर उसे सरल व सहज बना दिया गया है। इन सिद्धान्तों की सत्यता का विश्वास एक साधारण हिन्दी पाठी मनुष्य भी आसानी से कर सकता है जो कि इस ग्रन्थ की रचना से पूर्व कदापि सम्भव नहीं था। संसार में अनेक लोगों ने इस ग्रन्थ को पढ़ा है और इससे सहमत होकर अपना मत परिवर्तन कर आर्यसमाज के अनुयायी बने हैं। आज आर्यसमाज में जितने भी सदस्य व परिवार हैं वह सब प्रायः सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन व प्रचार का ही परिणाम है। संसार में किसी विद्वान, मताचार्य व मतानुयायी में यह योग्यता नहीं है कि वह सत्यार्थप्रकाश के प्रथम से दशम समुल्लासों में व्यक्त विचारों, मान्यताओं, सिद्धान्तों सहित उसमें दी गई तर्क व युक्तियों का खण्डन कर सकें। यदि कभी किसी ने ऐसा करने का प्रयत्न किया है तो उसका आर्य विद्वानों ने तर्क, युक्ति व प्रमाण सहित समाधान कर दिया है। यह कोई सामान्य नहीं अपितु असाधारण बात है।

वैदिक सिद्धान्तों के आदर्श ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में वैदिक मान्यताओं का विस्तार से उल्लेख करने के बाद स्वामी दयानन्द उसके उत्तर भाग में आर्यावर्त्तीय व आर्यावर्त्त से बाहर के देशों में उत्पन्न मतों की समीक्षा करते हैं जिसमें सत्यासत्य की परीक्षा करते हुए असत्य विचारों व मान्तयओं का खण्डन भी किया गया है। सत्यार्थप्रकाश का ग्यारहवां समुल्लास आर्यावर्त्तीय आस्तिक मतों की समीक्षा व खण्डन में लिखा गया है जिसका आरम्भ अनुभूमिका से होता है। यह भूमिका बहुत महत्वपूर्ण एवं विस्तृत है। इस अनुभूमिका में महर्षि दयानन्द ने मत–मतान्तरों के खण्डन में अपनी निष्पक्ष व सभी मतों के मनुष्यों के प्रति अपनी सदभावना को प्रदर्शित किया है। उनके अनमोल व स्वर्णिम वाक्य हैं कि यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत भूगोल में न था क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ। इन (वेदों) की अप्रवृत्ति से अविद्याऽन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुश्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिस के मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। इन सब मतों में 4 चार मत अर्थात् जो वेद–विरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी (अन्य) सब मतों (मतों की शाखा–प्रशाखा रूप इकाईयों) के मूल हैं, वे क्रम से एक के पीछे दूसरा, तीसरा, चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं हैं। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सब को परस्पर सत्याऽसत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश) बनाया है। महर्शि दयानन्द आगे लिखते हैं कि जो–जो इस में सत्य मत का मण्डन और असत्य मत का खण्डन लिखा है वह सब को जनाना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है उसको सब के आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है क्योंकि विज्ञान (धर्म व समाज विषयक सत्य ज्ञान) गुप्त (विलुप्त) हुए का पुनर्मिलना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इस (सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ) को देखने से सत्याऽसत्य मत सब को विदित हो जायेगा। पश्चात् सब को अपनी–अपनी समझ के अनुसार सत्यमत का ग्रहण करना और असत्य मत को छोड़ना सहज होगा। इन में से जो पुराणादि ग्रन्थों से शाखा शाखान्तर रूप मत आर्यावर्त्त देश में चले हैं उन का संक्षेप से गुण व दोष इस (सत्यार्थप्रकाश के) ग्यारहवें समुल्लास में दिखलाया जाता है। स्वामी दयानन्द सभी मतों के लोगों से अपेक्षा करते हुए कहते हैं कि 'इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं किन्तु सत्याऽसत्य का निर्णय करने–कराने का है। इसी प्रकार सब मुनष्यों को न्यायदृष्टि से वर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्याऽसत्य का निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद–विवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मत–मतान्तर के विचार से जगत् में जो–जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और आगे होंगे, उन को पक्षपातरहित विद्वज्जन जान सकते हैं।'

मत–मतान्तरों के खण्डन–मण्डन के सदर्भ में स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत–मतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्श्या–द्वेश छोड़ सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहे, तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सब को विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन (हित वा स्वार्थ) में न फंस कर सब के प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इस के होने की युक्ति (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के अन्तर्गत) इस (ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश) की पूर्ति पर लिखेंगे। सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत (वैदिक मत) में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों की आत्माओं में प्रकाशित करे। स्वामी जी ने उपर्युक्त पंक्तियों में मत–मतान्तरों की परस्पर विरोधी मान्यताओं के खण्डन के अपने आशय को स्पष्ट कर उसकी आवश्यकता व अपरिहार्यता पर प्रकाश डाला है। उनका ऐसा करना उचित, न्यायसंगत व प्रशंसनीय था तथा सभी विद्वान व ज्ञानी कहलाने वाले मतों के आचार्य व अनुयायियों को उसी भावना से उनके खण्डन को समझ कर स्वीकार करना चाहिये अन्यथा उनके ज्ञान व विद्वता का कोई महत्व व उपयोग प्रतीत नहीं होता।

सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने आर्यावर्त की महत्ता का वर्णन कर शंकराचार्य के अद्वैतमत, वाममार्ग, शैवमत, वैश्णवमत, सभी प्रकार की अवैदिक मूर्तिपूजा, तन्त्र ग्रन्थ, गया श्राद्ध, हरिद्वार आदि तीर्थों, अवैदिक गुरु माहात्म्य, अठारह पुराण, ग्रहों का फल, गरुड़ पुराण की मिथ्या बातें, ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाज आदि मतों की समीक्षा व खण्डन कर उनकी मिथ्या बातों का युक्ति व तर्क के साथ खण्डन किया है। इसी प्रकार बारहवें से चौदहवें समुल्लासों में जैन–बौद्ध मत, ईसाई व कुरानी मत की समीक्षा कर इनके मिथ्यात्व पर प्रकाश डाला है जिससे कि इन वा अन्य मतों के सभी अनुयायी व निश्पक्ष जिज्ञासु सरलता से सत्याऽसत्य का निर्णय कर सकें।

महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त वाक्यों से यह विदित होता है कि उनका मत–मतान्तरों की समीक्षा व खण्डन का हेतु सभी मतों के लोगों को मत–पन्थों के धर्म ग्रन्थों में निहित मिथ्या मान्यताओं का ज्ञान कराना था। ऋषि ने ऐसा क्यों किया? यदि न करते तो क्या हानि थी? अन्य मतों के आचार्यों व विद्वानों ने तो ऐसा नहीं किया तो फिर महर्षि दयानन्द को इनके खण्डन करने की क्या मजबूरी थी? इनका उत्तर है कि ऋषि ने मत–मतान्तर की असत्य मान्यताओं का खण्डन इस लिये किया कि वह विद्वान थे और विद्वान वही होता है जो सत्य को ग्रहण करे व कराये और असत्य को छोड़े वा छुड़वाये। वह व्यक्ति विद्वान नहीं कहला सकता जो जानते हुए भी असत्य का खण्डन नहीं करता। एक डाक्टर यदि रोगी का उपचार न करे तो क्या वह डाक्टर कहला सकता है? कदापि नहीं। यदि वह रोगी का उपचार करता है तभी वह डाक्टर है। दर्जी यदि लोगों के कपड़े को उसके दाता की नाप के अनुसार काट–छांट कर नहीं सिलता तो वह दर्जी किसी काम का नहीं होता। यदि नाप में न्यूनता व अधिकता करता है तो भी वह अच्छा दर्जी नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द ने भी मतों की असत्य बातें जिनसे मतानुयायियों को हानि होती है, उनसे परिचित कराकर उनके उस असत्यता के रोग को दूर कर उचित मात्रा में उन्हें सत्य का यथार्थ ज्ञान कराया जिससे वह तदनुसार आचरण कर अपना जीवन सफल बना सके जो कि परम्परा के अनुसार चलने से नहीं बन सकता था। किसान भी फसल की अच्छी पैदावार के लिए खेत में हल चलाकर भूमि को पोला व नरम करता है। उसमें पानी व खाद डालता है जिससे बीज अच्छी प्रकार से पल्लवित और पुष्पित हो सके। खेत में हल चलाना, खाद व पानी डालना, निराई व गुड़ाई करना व अन्त में बोई गई फसल को काटना व उनसे अन्न के दाने निकालना, यह एक प्रकार का खण्डन व मण्डन दोनों ही है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हमें अन्न प्राप्त नहीं होगा। यही सृष्टि का नियम है। यही नियम माता–पिता द्वारा सन्तान को शिक्षित करने के लिए ताड़ना करने व डाक्टर द्वारा गम्भीर रोगों की चिकित्सा करने में शल्य क्रिया करने, यदा–कदा हाथ व पैर तक काट डालने आदि की तरह, असत्य का खण्डन व सत्य का मण्डन अर्थात् जो ठीक है, उसे नहीं छेड़ना यथावत् रहने देना रूपी मण्डन है। सभी क्षेत्रों में सभी लोग आवश्यकतानुसार खण्डन व मण्डन करते हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो सभी मतों के आचार्यों ने अपने पूर्व मतों व उनके आचार्यों की मान्यताओं का खण्डन कर ही स्वमत को स्थापित किया। यदि वह सब ऐसा कर सकते थे तो मनुष्य मात्र के हित व उन्नति की दृष्टि से महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया खण्डन उचित क्यों नहीं? उनका खण्डन करना सर्वथा उचित है।

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य संसार के मनुष्यों को मत–मतान्तरों के जाल से निकाल कर उन्हें उनसे स्वतन्त्र कराना व सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, निराकार, घट–घट में व्यापक वा सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना व उपासना में लगाना था। इससे मनुश्यों को इस जन्म व परजन्म, दोनों में ही, सभी प्रकार की उन्नति अभ्युदय व निःश्रेयस का लाभ मिलना निश्चित था। यदि धर्मान्तरण कर अपनी संख्या में वृद्धि करने वाले सत्यासत्य से मिश्रित मान्यताओं के मतों को अपना–अपना प्रचार व खण्डन मण्डन का अधिकार है तो फिर महर्शि दयानन्द को सत्य का मण्डन व असत्य के खण्डन का अधिकार क्यों नहीं?स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वर प्रदत्त अधिकार का उपयोग किया, लोगों को असत्य से दूर किया व सत्य को प्राप्त कराया, इस कारण सारी मनुष्य जाति उनकी ऋणी हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। महर्शि दयानन्द ने खण्डन का कार्य अपने गुरु स्वामी विरजानन्द और ईश्वर की प्रेरणा से ही किया था। हमें उनके मार्ग पर चलकर संसार को सत्य व असत्य के स्वरुप से परिचित कराना है। कोई सत्य वैदिक मत को स्वीकार करे या न करें, यह उसका निजी अधिकार है, परन्तु आर्यसमाज व इसके अनुयायियों को सत्य के प्रचार का अपना कर्तव्य निभाना है। 'सत्यमेव जयते नानृतं' की भांति सत्य देर में ही सही, विजयी अवश्य होता है। आगे भी होगा। ईश्वर संसार के मनुष्य के हृदय में सत्य व असत्य को जानने, सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य का त्याग करने की प्रेरणा करें, यही उससे प्रार्थना है।

संस्कारित युवक ही देश की संस्कृति की रक्षा करेंगे –डा.अनिल आर्य

रविवार, 8 मई 2016,स्वामी कृष्णानन्द बालाश्रम,आर्य समाज,ब्रह्मपुरी,पूर्वी दिल्ली में युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डा.अनिल आर्य ने आह्वान किया कि संस्कारवान युवा पीढ़ी आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है, इन शिविरों के माध्यम से ऐसे ही युवा तैयार होकर निकलेंगे जो नये समाज की संरचना का कार्य करेंगे । उपरोक्त चित्र में–पूर्वी दिल्ली की महापौर श्रीमती सत्या शर्मा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,स्वामी विश्वानन्द जी,रामानन्द आर्य,सुन्दर शास्त्री,राजेश आर्या,पालाराम आर्य,अंगदसिंह आर्य आदि व द्वितीय चित्र में विजेता बच्चों को पुरस्कृत करते डा.अनिल आर्य,पार्षद सविता शर्मा,समाजसेवी प्रमोद गुप्ता,स्वामी विश्वानन्द जी,रविन्द्र आर्य,सुन्दर शास्त्री व बलजीत आदित्य व रामानन्द आर्य । स्वामी शिवानन्द जी ने भी आशीर्वाद प्रदान किया । परिषद् के शिक्षक अभिषेक द्विवेदी ने प्रशिक्षण प्रदान किया ।

प्रो.बलराज मधोक की व किशोरीलाल आर्य की श्रद्धाजंलि सभा सम्पन्न

वीरवार, 5 मई 2016,भारतीय जनसंघ के संस्थापक,राष्ट्रवादी चिन्तक प्रो.बलराज मधोक का 96 वर्ष की आयु में निधन हो गया । श्रद्धाजंलि सभा सत्संग भवन,राजेन्द्र नगर,नई दिल्ली में सम्पन्न हुई । चित्र में उनकी सुपुत्री माधुरी संस्मरण सुनाते हुए । इस अवसर पर आर्य नेता डा. अनिल आर्य, सतीश उपाध्याय (प्रदेश अध्यक्ष भाजपा), प्रवेश वर्मा(सांसद), विजेन्द्र गुप्ता, सुभाष आर्य, डा.महेश शर्मा, मूलचन्द चावला, राजेश भाटिया(पार्षद), मांगेराम गर्ग, प्रि.मोहनलाल, ओम सपरा, ओमप्रकाश त्रेहण, अरविन्द मिश्रा, प्रोमिला घई, पूर्णिमा विद्यार्थी, अर्चना गुप्ता(पार्षद) आदि उपस्थित थे । द्वितीय चित्र–शनिवार, 7 मई 2016, युवा वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के पिताजी श्री किशोरीलाल आर्य की श्रद्धाजंलि सभा आर्य समाज,राजेन्द्र नगर,दिल्ली में सम्पन्न हुई । सभा को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्य वेश जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री,अजय सहगल(सम्पादक,टंकारा समाचार),अशोक सहगल,सतीश मेहता,महेन्द्र भाई,डा.कैलाश,प्रकाश कथुरिया,जनक चुघ,नरेन्द्र वलेचा,अंकित उपाध्याय,नारायणसिंह आर्य,देव आर्य आदि ने सम्बोधित किया । डा.अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया ।

युवा नेता डा.महेन्द्र नागपाल का व आचार्य जीवनप्रकाश शास्त्री का अभिनन्दन

रविवार, 8 मई 2016,आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–1,दिल्ली में आयोजित समारोह में समाजसेवी डा.महेन्द्र नागपाल का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,पी.के. सचदेवा(प्रधान),जीवनलाल आर्य(मन्त्री),देवेन्द्र भगत,आनन्दप्रकाश आर्य,सतीश शास्त्री, आदि व द्वितीय चित्र–वैदिक विद्वान आचार्य जीवनप्रकाश शास्त्री व श्रीमती पुष्पा शास्त्री का द्वारका में अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,डा.धर्मेन्द्र शास्त्री,हंसराज आर्य,रामरतन वकील,शान्ता तनेजा,सुदर्शन तनेजा आदि ।

ग्राम टीला,गाजियाबाद में यज्ञ सम्पन्न व अम्बाला में आर्य युवक परिषद्

आर्य समाज,ग्राम टीला,गाजियाबाद के तत्वावधान में 9 मई से 15 मई 2016 तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया । चित्र में डॉ. अनिल आर्य, रामकुमार सिंह, वेदप्रकाश आर्य व समाज के संरक्षक श्री टेकन सिंह सरपंच व अन्य अधिकारियों के साथ पं.सहदेव बेधड़क के ओजस्वी भजन हुए व आचार्य अरविन्द शास्त्री ने यज्ञ करवाया । आचार्य जयवीर, विजयपाल, अमित आर्य,अंकुर भारद्वाज,अजय पथिक ने व्यवस्था सम्भाली । द्वितीय चित्र–आर्य युवक परिषद् अम्बाला के तत्वावधान में बच्चों को पाठ्य पुस्तक व स्टेशनरी वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया,जिला अध्यक्ष अजय गुप्ता व मन्त्री भारत भूषण आर्य को हार्दिक बधाई ।

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ ओ३म् ॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

हम मस्तों में आन मिले कोई हिम्मत वाला रे

मातृ पितृ भक्त, चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान बनाने का लक्ष्य

बलमुपास्व

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर

शनिवार 11 जून से रविवार 19 जून 2016 तक

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर 44, नोएडा

सम्पर्क : श्री सौरभ गुप्ता- 9971467978, श्री अरुण आर्य - 9818530543

2. दिल्ली आर्य कन्या शिविर

रविवार 22 मई से 29 मई 2016 तक

स्थान : आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली

सम्पर्क : उर्मिला आर्या-9711161843, अनीता कुमार-9999699510

3. जीन्द आर्य युवक शिविर

बुधवार 1 जून से 7 जून 2016 तक

स्थान: ग्राम-दोहाना खेरा, नरवाना, जिला- जीन्द

सम्पर्क: अश्वनी आर्य- 9255422877, सूर्यदेव आर्य-9416715537

4. राजस्थान युवक निर्माण शिविर

रविवार 22 मई से 29 मई 2016 तक

स्वामी विवेकानन्द उ.मा. विद्यालय, भंगवाड़ीकलां, बहरोड़, अलवर

सम्पर्क : आचार्य रामकृष्ण शास्त्री-09887669603, 09461405709

5. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर

रविवार 5 जून से 12 जून 2016 तक

स्थान: श्रद्धा मन्दिर स्कूल, सैक्टर-88, फरीदाबाद

डॉ. गजराज सिंह-9213771515, जितेन्द्र सिंह-9210038065, वीरेन्द्र योगाचार्य-9350615369

6. पलवल युवक निर्माण शिविर

सोमवार 13 जून से रविवार 19 जून 2016 तक

स्थान: दयानन्द उच्च विद्यालय, पातली गेट, पलवल, हरियाणा

सम्पर्क: स्वामी श्रद्धानन्द जी-9416267482, दिनेश आर्य-9813289555

7. कैथल युवक निर्माण शिविर

रविवार 29 मई से रविवार 5 जून 2016 तक

स्थान: गुरु ब्रह्मानन्द आश्रम, बणी, पुण्डरी, कैथल

सम्पर्क : राजेश्वर मुनी-9896960064, स्वामी बलेश्वरानन्द जी

8. फरीदाबाद आर्य कन्या शिविर

रविवार 29 मई से 4 जून 2016 तक

स्थान: आर्य कन्या सदन, सैक्टर-15, फरीदाबाद

सम्पर्क: श्री पी.के. मित्तल-9818798217

9. उज्जैन कुम्भ मेला, वेद प्रचार शिविर

शुक्रवार 22 अप्रैल से 21 मई 2016 तक

स्थान: प्लॉट क्रं. 577, दत्त अखाड़ा क्षेत्र, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

सम्पर्क : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार-09977967777, 09977987777

10. उत्तराखण्ड योग-आयुर्वेद-प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

रविवार 22 मई से 29 मई 2016 तक

स्थान : गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौढ़ी गढ़वाल

सम्पर्क : ब्र. विश्वपाल जयन्त-09837162511

11. जम्मू युवक निर्माण शिविर

सोमवार 20 जून से 26 जून 2016 तक

स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू

सम्पर्क : श्री सुभाष बब्बर-09419301915, अरुण आर्य-9906029549

12. उड़ीसा युवक निर्माण शिविर

रविवार 29 मई से 5 जून 2016 तक

स्थान: वेद व्यास संस्कृत महाविद्यालय, राऊरकेला, उड़ीसा

सम्पर्क : आचार्य धनेश्वर बेहरा-09337117429

13. जयपुर युवक निर्माण शिविर

सोमवार 20 जून से 26 जून 2016 तक

स्थान: अग्रसेन भवन, शिप्रा पथ मानसरोवर, जयपुर

सम्पर्क : श्री यशपाल यश-09414360248, रामगोपाल सिंघल-9314874859

14. करनाल युवक निर्माण शिविर

बुधवार 22 जून से 26 जून 2016 तक

स्थान : आर्य समाज, प्रेम नगर, करनाल

स्वतन्त्र कुकरेजा-9813041360, अजय आर्य-9416128075, हरेन्द्र चौधरी-9541555000

15. उत्तराखंड युवक निर्माण शिविर बुधवार 25 मई से 1 जून 2016 तक

स्थान: सैनिक हाई स्कूल, बागेश्वर, उत्तराखण्ड सम्पर्क: श्री गोबिन्दसिंह भण्डारी-09412930200

हम अभावों के बावजूद रहते हैं नम्बर वन: यानी सबसे आगे

सभी शिविरों के 'उद्घाटन व समापन' पर दल बल सहित पहुँचे व तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

उद्घाटन समारोह:
रविवार, 22 मई 2016, प्रातः 10 से 12 बजे तक

भव्य समापन व दीक्षा समारोह:
रविवार, 29 मई 2016, प्रातः 11 बजे से 1.30 बजे तक

स्थान: आर्य समाज,विशाखा एनक्लेव,पीतमपुरा,दिल्ली-110034

नीता खन्ना	माता कृष्णबाला	वेदप्रभा बरेजा	उर्मिला आर्या	अर्चना पुष्करना	अनिता कुमार
संरक्षक	शिविराध्यक्ष	प्रभारी	अध्यक्षा	महामन्त्री	कोषाध्यक्षा

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष: 41548503 मो. 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक:** दिनेश आर्य मोबाईल: 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल: 9958889970